About Vineet Narain

Senior Journalist Vineet Narain's name is a synonym to anti-corruption crusades in India. In 1993 he exposed the now famous Jain Hawala Scam and through a PIL in Supreme Court got dozens of Union Ministers, Governors, Chief Ministers and opposition leaders charged for corruption for the first time in Indian history. This PIL is better known as ***Vineet Narain Vs. Union of India***, which is a landmark judgement and is regularly quoted in the corruption related cases. The Central Vigilance Commission was re-structured with more powers as an outcome of this judgement.

During 1997-2001, Narain dared to expose the immoral conduct of the members of top judiciary of the country. His investigative reports were backed with concrete evidences. Appreciating his courage, the former Supreme Court Judge and the then Chairman Press Council of India Justice PB Sawant wrote, *"Mr. Vineet Narain, Editor, Kalchakra has been one of the courageous journalists who has done much at personal risk to expose corruption in many fields of our national life. His conviction to fight corruption is so strong that in last two years he went beyond the usual limits of journalism and showed exemplary courage to expose corruption also in the higher judiciary. His efforts have brought the issue of misuse of the Contempt of Courts Act into focus.*

During my tenure as the Chairman, Press Council of India, I have closely observed the work of Mr. Narain and I admire him for his tireless crusades without any expectation for reward or recognition from the established opinion makers. I wish him a bright future and hope that he will continue to inspire new generation of journalists with his outstanding contribution to Indian society".

Narain is also the pioneer of investigative journalism. He started investigative TV news in 1986 through Doordarshan's TV show titled '***Sach Ki Parchhain***'. As a protest against the editorial interference of govt. he founded independent Hindi TV news in India - ***Kalchakra*** in 1989 and created major ripples. His sting operations were aimed at exposing the social evils. This dimension of journalism was unknown to Indian media. In 1990, he challenged the pre-censorship of TV news in the Delhi High Court and generated major debate throughout the country.

He has authored two volcanic books in Hindi on the above crusades titled '***Bhrashtachaar, Aatankvaad Aur Hawala Karobar***' & '***Adaalat ki Avmaanana Kaanoon Ka Durupyog***'.

Mr. Narain writes a syndicated column in two dozen popular regional dailies of several Indian states. He regularly participates in debates on national news channels. From 1998 to 2008, he regularly reported to the ***SBS Radio of Australia***.

He is the founder and Past President of ***Foundation for Media Professionals***, New Delhi (www.fmp.org.in).

Through ***Kalchakra Samachar Trust*** (New Delhi) Narain brings out publications on national issues, whenever the mainstream media is hesitant to publish bold reports (e.g. about corruption in higher judiciary).

Narain's contribution to electronic media and the national cause has been, for three decades, widely reported in Indian and foreign media.

Narain is frequently invited by the Press Clubs, Chambers of Commerce, Bar Councils, Rotary & Lions Clubs in Indian Cities, prestigious professional bodies in India and abroad like; Medical Professions, Silicon Valley, IIM Alumni Associations, IITs, Students Unions & spiritual organizations. He has also delivered lectures at several foreign universities such as Stanford, Purdue, Maryland, Oxford, Harvard besides several Indian Universities.

In addition to his journalistic pursuits, Mr. Narain is actively involved in the conservation of the 5,000 years old rich cultural and environmental heritage of Braj - the land of Lord Radha-Krishna. Top politicians, senior bureaucrats and corporate giants are helping him in restoring heritage sites in Braj which is in close proximity of Agra-the city of Taj. (www.brajfoundation.org)

To know more about him and his work you can log on to: www.vineetnarain.net

He can be contacted at : mail@vineetnarain.net

देश के जाने–माने योद्धा पत्रकार श्री विनीत नारायण का परिचय

केन्द्रीय सतर्कता आयोग (सी.वी.सी.) की स्वर्ण जयंती पर 12 फरवरी, 2014 को दिल्ली के विज्ञान भवन में बोलते हुए भारत के राष्ट्रपति डा.प्रणव मुखर्जी, प्रधानमंत्री डा.मनमोहन सिंह, भारत के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति सदाशिवम्, केंद्रीय सतर्कता आयुक्त श्री प्रदीप कुमार व सी.बी.आई. के निदेशक श्री रंजीत सिन्हा आदि सभी वक्ताओं ने भ्रष्टाचार के विरूद्ध कानून बनाने की प्रक्रिया में श्री विनीत नारायण के एतिहासिक योगदान का प्रमुखता से उल्लेख किया।

14 फरवरी, 2014 को अमेरिका के विश्वप्रसिद्ध हॉवर्ड विश्वविद्यालय में भारत के भविष्य पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में आयोजकों ने श्री विनीत नारायण का परिचय देते हुए उन्हें भ्रष्टाचार के विरूद्ध लड़ाई लड़ने वाले भारत के पहले बड़े पुरोधा बताया। यहां बोलते हुए श्री नारायण ने कहा कि 'भ्रष्टाचार को समाप्त करने को लेकर जितनी अपेक्षाएं हैं और जो जमीनी हकीकत है, उसमें भारी अंतर है। इसलिए बार–बार निराशा हाथ लगती है।''

बिना जनलोकपाल कानून बने ही, बिना निजी टी.वी. चैनलों के दौर में, बिना ई–मेल व एसएमएस की सुविधा के और बिना कोई बड़ा जनआंदोलन खड़ा किए ही श्री विनीत नारायण ने देश के ताकतवर लोगों के भ्रष्टाचार से वर्षों एक जोखिम भरा युद्ध लड़ा और इतिहास रचा। 1996 में देश के दर्जनों केंद्रीय कैबिनेट मंत्रियों, मुख्यमंत्रियों, राज्यपालों व विपक्ष के बड़े नेताओं को जैन हवाला कांड में चार्जशीट करवाने का श्रेय श्री विनीत नारायण को जाता है। भारत के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ। यह संघर्ष करते हुए श्री नारायण ने अपनी जान पर कई हमलों को झेला, सत्ता के उच्च पदों और करोड़ों रूपये की रिश्वत के प्रस्तावों को ठुकराया और इस संघर्ष में अकेले डटे रहे। इस संघर्ष पर विस्तृत जानकारी के लिए आप उनकी दिल दहला देने वाली पुस्तक 'भ्रष्टाचार, आतंकवाद और हवाला कारोबार' उनकी वेबसाइट *{vineetnarain.net}* पर पढ़ सकते हैं।

1997 में हवाला कांड को रफा–दफा करने में भारत के मुख्य न्यायाधीश की अनैतिक भूमिका को उजागर करने में भी उन्होंने संकोच नहीं किया। 115 करोड़ की आबादी वाले इस देश में श्री नारायण अकेले पत्रकार और नागरिक हैं, जिन्होंने भारत के तीन पदासीन मुख्य न्यायाधीशों के भ्रष्टाचार को सप्रमाण उजागर करने की दिलेरी दिखाई। जिससे देश की न्यायपालिका में हड़कंप मच गया। इस संघर्ष पर उनकी पुस्तक 'अदालत की अवमानना कानून का दुरूपयोग' एक चौका देने वाला ऐतिहासिक दस्तावेज है।

केंद्रीय सतर्कता आयुक्त व सी.बी.आई. के निदेशक की नियुक्ति सर्वोच्च न्यायालय के जिस महत्वपूर्ण फैसले के तहत की जाती है उसे 'विनीत नारायण बनाम भारत सरकार' के नाम से जाना जाता है।

सेटेलाइट टी.वी. चैनलों के अवतरण से बहुत पहले 1989 में कालचक्र वीडियो समाचार जारी कर श्री नारायण ने भारत में स्वतंत्र हिन्दी टीवी पत्रकारिता की स्थापना की। 1986 में दूरदर्शन पर अपने टी.वी. शो सच की परछाई के माध्यम से उन्होंने देश में पहली

बार खोजी टी.वी. पत्रकारिता की शुरूआत की। वे हर हफ्ते हिन्दी/अंग्रेजी टी.वी. न्यूज चैनलों पर चर्चाओं पर दिखाई देते हैं।

श्री नारायण हर सप्ताह देश के 22 राज्यों के लोकप्रिय दैनिक अखबारों में समसामायिक विषयों पर नियमित पैने लेख लिखते हैं। वे नियमित रूप से देश–विदेश के विश्वविद्यालयों, सामाजिक संगठनों, बॉर काउंसिलों व औद्योगिक समूहों द्वारा समसामायिक मुद्दों पर व्याख्यान देने के लिए बुलाए जाते हैं।

कुछ वर्षों से श्री नारायण और उनकी समर्पित टीम ने ब्रज में सांस्कृतिक धरोहरों के जीर्णोद्धार के अभूतपूर्वक कार्य संपन्न किए है। उनकी संस्था 'द ब्रज फाउण्डेशन (www.brajfoundation.org)' भगवान श्री राधाकृष्ण की लीलाओं से जुड़े ब्रज के 137 वनों, 1000 ऐतिहासिक कुण्डों, 72 वर्ग कि.मी. दिव्य पर्वतों, ऐतिहासिक भवनों व श्री यमुनाजी के जीर्णोद्धार में रात–दिन जुटी है।

संपर्क द्वारा :
श्री रजनीश कपूर
प्रबंधकीय संपादक
कालचक्र समाचार ब्यूरो
सी–6/28, एसडीए, हौजखास
नई दिल्ली–110016
दूरभाष : 09873946800 व 011–26566800